ISSN - 2394-2266

सिपना शिक्षण प्रसारक मंडल, अमरावती द्वारा संचालित

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

चिखलदरा, जिला–अमरावती

(नॅक द्वारा 'ब' श्रेणी प्राप्त) (CGPA:2.58)

एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के तत्वाव्धान में

सार्थक उपलब्धि

मार्च ९–१०, २०१७

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं महाराष्ट्र हिंदी परिषद का २४ वाँ अधिवेशन

आधुनिक हिंदी साहित्य के विविध विमर्श

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	संशोधक	पृष्ठ क्र.
	नारी विमर्श		
१	आधुनिक हिंदी गजलों में नारी विमर्श	डॉ. मधुकर खराटे	१
२	सामाजिक स्तर पर चुनौती देती हिन्दी-उर्दू स्त्री आत्मकथाएँ	डॉ. तूबा जमाल	५
३	अन्या से अनन्या की पहचान बनाती नारी की साहसिक गाथा	डॉ. अनिता नेरे	८
४	कुसुम कुमार के साहित्य में अभिव्यक्त स्त्री शोषण	आतार तैहसीन हबीबसाब	११
५	नारी विमर्श : अलका सरावगी जी के उपन्यासों के संदर्भ में ...	प्रा. बापू शेळके	१३
६	चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी विमर्श	प्रा. नाजिया परविन शेख आरिफ	१६
७	स्वदेश दीपक के नाट्यसाहित्य में नारी विमर्श	डॉ. पी.व्ही. कोटमे	१९
८	शिवानी के उपन्यासों में संवेदना	डॉ. एस.के. शुक्ल	२२
९	नारी विमर्श - कवयित्री की दृष्टि में	डॉ. कामिनी तिवारी	२५
१०	उषा प्रियंवदा की कहानियों में आर्थिक आत्मनिर्भरता की तलाश में छटपटाती नारी	डॉ. संदिप श्रीराम पाईकराव	२९
११	आधुनिक हिंदी नाट्य साहित्य में स्त्री-विमर्श	डॉ. दत्तात्रय वामनराव मोहिते	३१
१२	आधुनिक महिला साहित्यकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श	डॉ. प्रीति सुरेंद्रकुमार सोनी	३३
१३	नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'रंगशाला' उपन्यास का अनुशीलन	डॉ. संजय ढोडरे	३६
१४	विदर्भ की महिला रचनाकारों के काव्य में स्त्री विमर्श	डॉ. कमलकिशोर एस. गुप्ता	३९
१५	'नदी पीछे नहीं मुडती' उपन्यास में नारी विमर्श	प्रा.डॉ. मिलींद साळवे	४३
१६	स्वदेश दीपक के नाट्य साहित्य में नारी विमर्श	गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल	४६
१७	आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श	कु. ज्योंती भीमराव जगताप	४९
१८	ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श	प्रा. प्रमोद किशनराव धन	५१
१९	स्त्री विमर्श एवं नाटक पीढियोंका प्रवाह	डॉ. अंशुमान वल्लभ मिश्रा	५२
२०	नारी विमर्श - आज की नारी : स्थिती एवं गति	हर्षराज गुलाबराव पाटील	५३
२१	मोहन राकेश की कहानियों में नारी विमर्श	डॉ. सविता व्ही रुक्के	५५
२२	आधुनिककाल के पूर्व हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श	घोरपडे पद्माकर पांडुरंग	५७
२३	आधुनिककाल की कहानियों में कामकाजी नारी विमर्श	संगिता बबन बाजपेयी	५९
२४	प्रभा खेतान के काव्य में संवदेना	प्रा. प्रल्हाद पावरा	६१
२५	रामायण में नारी विमर्श	प्रा. गुंड श्रीमंत जगन्नाथ	६४
२६	समकालीन प्रमुख उपन्यासों में नारी-विमर्श	प्रा. रेखा धुराटे	६७
२७	आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्श : एक अध्ययन	डॉ. संजय चोपडे	६९
२८	'ललमनियाँ' कहानी में स्त्री-विमर्श	डॉ. शंकर रामभाऊ पजई	७२
२९	महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में व्यक्त नारी विद्रोह एवं मुक्ति की अभिव्यक्ति	प्रा.डॉ. मुकेश दामोदर गायकवाड मुकेशराजे	७४
३०	ममता कालिया के उपन्यासों में नारी विमर्श	डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील	७७
३१	समकालीन हिंदी कहानियों में स्त्री विमर्श	डॉ. के. बी. गंगणे	७९
३२	नारी विमर्श : 'हलाला' उपन्यास के विशेष संदर्भ में...	प्रा. डॉ. पिरु आर. गवळी	८०

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श

प्रा. प्रमोद किशनराव घन
हिंदी विभाग प्रमुख
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगांव

हिंदी साहित्य के समकालिन महिला कथाकारों में ममता कालिया विख्यात लेखिका है। नारी मन की अनुभूतियों की सुंदर व्याख्या करने में ममता कालिया सिध्दहस्त है, उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी को पुरूष के समकक्ष स्थापित किया है। साठोत्तरी महीला कथाकारों में कश्ष्णा सोबती, मन्नु भंडारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग तथा ममता कालिया का विशेष रूप में नाम लिया जाता है। इन महिला कथाकारों की कतार को देखते हुए राजेंद्र यादव ने आलोचना पत्रिका के '४७' वे अंक में लिखा था ''इस समय तो सारा कथाक्षेत्र प्रायःनारीयों के हाथ में है।''

ममता कालिया का जन्म २ नवम्बर १९४० को वश्ंदावन में हुआ, माता इंदुमति और पिता विद्याभूषण अग्रवाल है। ममताजी का विवाह दिल्ली के समानधर्मी रचनाकार रविंद्र कालिया के साथ हुआ। उन्हे कई पुरस्कार मिल चुके है १९६३ में 'साप्ताहिक हिंदुस्थान' दिल्ली की ओर से प्राप्त हुआ साथ ही साथ १९७६ में 'सरस्वती प्रेस' इलाहाबाद की ओर से 'सर्वश्रेष्ठ कहानीकार एवं कहानी पुरस्कार', १९८५ को 'उसका यौवन' कहानी संग्रह पर 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 'यशपाल सम्मान पुरस्कार', १९९० में 'अभिनव भारती' कोलकाता की ओर से 'रचना सम्मान पुरस्कार', १९९८ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की ओर से 'महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान पुरस्कार' १९९९ में 'बोलनेवाील औरत' कहानी संग्रह पर 'सावित्रीबाई फुले पुरस्कार', २००० मे उ.प्र. हिंदी संस्थान का 'साहित्य भूषण पुरस्कार', २००२ में 'मानव संसाधन मंत्रालय की ओर से पुरस्कार आदि पुरस्कारों से उन्हे सम्मानित किया गया है। ममता कालिया ने हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं को स्पर्श किया है, जिसमें कहानी, कविता, बालसाहित्य, तथा उपन्यास इन विधाओं में उनकी विशेष रचनाएँ दिखाई देती है। बी.ए. में पडते समय उन्होंने साहित्य लेखन शुरू किया 'नई दुनिया' अखबार में उनकी पहली कविता 'प्रयोगवादी प्रियतम' शिर्षक से छपी थी। उन्होने ग्यारह कहानी संग्रह, तीन एकांकी संग्रह, दो कविता संग्रह तथा छः उपन्यास लिखे है।

ममता कालिया के 'बेघर' उपन्यास की कथावस्तु स्त्री–पुरूष के शारीरिक संबंधो को केंद्र में रखकर लिखी गई है। इस उपन्यास में पुरूष की संस्कारबध्द जडता और संदेह वृत्ति को चित्रित किया है, पुरूष को केंद्र में रखकर नारी समस्या का उद्‌घाटन करना ममताजी के लेखन की कला है। इस उपन्यास का नायक परमजित है, वह पंजाबी होने के कारण लाला बग्गूमल छात्रवृत्ति मिलने के लोभ मात्र से लालचंद प्राइवेट कॉलेज में पंजीकरण करनेवाला परमजीत कॉलेज जाने के बाद परिवार के प्रति उदासीन हो जाता है। बम्बई जैसे महानगरों के बारे में असंख्य गलत फहमियाँ रखनेवाला परमजीत कच्ची–पक्की अंग्रेजी की संपत्ति पर बम्बई निकल पडता है। 'कम्फर्ट रेफ्रिजरेशन' कम्पनी में साधाराण सा काम पाकर तरक्की करके चीफ एजंट बन जाता है। वालिया एडवरटाईजिंग ऐजेन्सी के मालिक वालिया और उसकी प्रेयसी विजया केलकर के अनैतिक संबंधो से प्रभावित होता है। परंपरागत मिथकों को माननेवाला परमजीत एक दिन संजीवनी भरूचा नामक लडकी के प्रेम में पड जाता है। सघन बनता हुआ प्रेम एक दिन टूट भी जाता है। क्योंकि संजीवनी व्दारा समर्पन के पहले मौके पर पाता है कि वह संजीवनी के लिए पहला नही है और परिणाम स्वरूप कौमार्य का मिथक उसे संजीवनी से विरक्त बना देता है। संजीवनी को कुछ भी कहने का मौका दिये बिना परमजीत रमा से शादी करता है। सुहागरात के दिन परमजीत बहुत खुश होता है, क्योंकि उसने एहसास किया है कि उसकी बीबी कुँवारी है, किन्तु कुछ ही दिनों में बेलिहाज और गैर संवेदनशील, रूढिग्रस्त रमा के व्यवहार की संत्रस्थता से परमजीत को दिल का दौरा पडता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। संजीवनी को बेघर करने वाला परमजीत रमा के साथ साथ स्वयं बेघर हो जाता है। इस प्रकार इस उपन्यास में संजीवनी की अंतहीन व्यथा को ममता कालिया ने परमजीत जैसे शिक्षित –दीक्षित पुरूषों की परंपरागत सोच समझ और स्त्री के प्रति भोगवादी, सामंती तथा अमानवीय व्यवहार को चित्रित किया है।

उनका दुसरा उपन्यास 'नरक दर नरक' इस उपन्यास में प्रेमविवाह की समस्या का चित्रण दिखाई देता है, इस उपन्यास का नायक जोगेंदर सहानी उर्फ जगन चण्डीगढ थे। एक सामान्य परिवार का युवक है। एम.ए. अंग्रेजी की शिक्षा लेकर वह बेरोजगार है। समयचक्र से आहत होकर वह मुंबई के केडिया कॉलेज में प्रवक्ता के रूप में नौकरी प्राप्त करता है। नौकरी के कारण वह जीवन में स्थैर्य का अनुभव करता है और छुट्टियों में समर इन्स्टिटयुट में काम करता है, उस समय जगन का परिचय उषा से होता है जो इस उपन्यास की नायिका है। उषा बहुत होशियार लडकी है इसलिए उसके पिताजी उसे उच्छी किताबे, अखबार, पत्र–पत्रिकाओं के लेख पढने के लिए लाते है। उसके पिताजी चाहते है कि उषा पीएच.डी. करें विदेश जाए और प्रोफेसर बने।

एक दिन अंग्रेजी की क्लास के दौरान उषा प्रवक्ता जोगेंदर साहानी से उलझ पडती है। टॉप ऑफ द क्लास बनी उषा को दूसरे दिन अपने सहपाठी सुभाष तुरखिया व्दारा मूवी देखने का निमंत्रण मिलता है। वहाँ जगन आ जाता है, संवादो के माध्यम से उषा और जगन में प्रेम पनपता है। छात्रप्रिय अध्यापक जगन पर छात्रोंव्दारा किये गये फसाद में साथ देने का दोष लगाकर उसे कॉलेज की सेवा से कार्य मुक्त किया जाता है। दूसरी नौकरी ढुंढने के लिए जगन चंदीगढ जाता है। वहाँ प्रेस में उसे नौकरी मिलती है। जगन और उषा बबलू नामक बच्चे को जन्म देते है। मोहरम के जुलूस में बबलू के हाथ से गिलास छुटकर पानी गीर जाता है। लोगों में खलबली मचती है और जगन की प्रेस को लोग तहस–नहस करते है। आर्थिक समस्या से घिरे हुए व्यक्ति का जीवन कैसे नरक बन जाता है और उषा जैसी बुध्दीमान लडकी के सपने चुर–चुर होते है यह बात इस उपन्यास से स्पष्ट होती है।

'प्रेम कहानी' तथा 'लडकियाँ' उपन्यास अप्राप्त रूप में ही सामने रहे है उनके पुर्नप्रकाशित करने का ममताजीने निर्णय किया। उनका 'एकपत्नी के नोट्स' यह १९९७ में प्रकाशित उपन्यास है एक जीनियस की प्रेमकथा तथा मनोविज्ञान नामक कहानीयों का संकलित विस्तार है। इस उपन्यास में पुरूष के अहं तथा प्रेमविवाह की समस्या को संदीप के माध्यम से स्पष्ट किया है। उनका छटा उपन्यास 'दौड' है इस उपन्यास में आर्थिक उदारीकरण और बाजारवाद के जीवनगत परिणामों का यथार्थ संकलन दिखाई देता है। इस प्रकार ममता कालिया के समग्र उपन्यासों में स्त्री विमर्श का सशक्त चित्रण दिखाई देता है।

*****